Content

# विषय-सूची


प्रथम अध्याय

१-५३

पृष्ठ भूमि

विषय-प्रवेश - मण्डल शब्द का अर्थ और प्रबंध में इसकी सार्थकता - साहित्यिक मंडल - राजनीतिक मंडल - राजनीतिक मंडल का विस्तार - विन्ध्य खंड(बुन्देलखंड) और दोआबा(अंतर्वेद) का भौगोलित परिचय - निवासी- मंडल की बोलियां - मंडल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि -(अतीतकाल से राजनैतिक चेतना का प्रवाह) भगवंतराय के समय की ऐतिहासिक स्थिति -(औरंगजेब की शासन-नीति और उसकी प्रतिक्रिया) हिन्दुओं में देश व्यापी जागृति - सांस्कृतिक पृष्ठभूमि - मंडल में मध्य देश की सर्वकालिक मान्यता - भगवंतराय के समय में मध्य देश की मान्यता के प्रति जागरूकता - मध्यदेश महाकवियों और महापुरुषों का लीला स्थल रहा है - सामाजिक स्थिति - गांव और नगर में दूरी - भगवंतराय ग्राम संस्कृति के नायक थे - गांवों का जीवन - स्रोत सूखा नहीं था - धार्मिक परिस्थिति - हिन्दू मुसलमानों में स्वाभाविक तनातनी - हिन्दुओं में प्रतिक्रिया के चिन्ह - वीर भाव की हनुमत उपासना का प्रचार - साहित्य और साहित्यकार की परिस्थितियां - रीतिकाल की प्रथम शताब्दी दूसरी शताब्दी से उत्कृष्ट पूर्ण थी - रीति काल का कवि सही मार्ग के लिए छटपटाता रहा -(जैसे देव) राष्ट्रीय जागृति का कवि ने नेतृत्व किया - प्रकृति - मंडल की प्रकृति, कवि की अनुभूति और उसकी अभिव्यक्ति में सहायक है - संगीत - संगीत की परम्परा - मुस्लिम संसर्ग की संगीत-क्षेत्र में प्रतिक्रिया - संगीत क्षेत्र की तीन पेटियां ।

द्वितीय अध्याय

५४-८८

(भगवंतराय का वंश परिचय और जीवनी)

वंश-परिचय - खीची, चौहानों की एक शाखा है - भगवंतराय के गागरोण के राजवंश के थे - गजसिंह ने असोथर की नींव डाली- भगवंतराय के पूर्वजों का वृत्त - भगवंतराय की जीवनी - जन्मकाल का अनुमान - उस समय पिता की आर्थिक स्थिति - प्रारम्भिक

संभावनायें - शिक्षा दीक्षा - प्रामाणिक जीवनी - मुगलों से कट्टर वैमनस्य - छत्रसाल से मित्रता - मुहम्मद खां वंगश के आक्रमण के समय इनकी स्थिति का अनुमान - कोड़ा जहानाबाद की फौजदारी पर अधिकार और फौजदार की पुत्री से अपने पुत्र का व्याह - कमरुद्दीन खां से संघर्ष - पुन: अपने प्रदेश पर अधिकार - सादत खां के साथ युद्ध और दुर्जन सिंह के हाथों मृत्यु - भगवंतराय का व्यक्तित्व (आकृति और वेश विन्यास)- शौर्य एवं शक्ति - भ्रमण - उपासना और इष्ट - प्रकृति और स्वभाव - प्रतिभा और विद्वता - गुण-ग्राहकता - दरबार ।

तृतीय अध्याय

८६ - १४५

(भगवंतराय खीची का साहित्यिक कृतित्व)

क्या भगवंत नाम के दो कवि हुए हैं ? - उपलब्ध रचनाएं - संभाव्य रचनाएं - कवित्त रामायण और कवित्त सागर - आलोचनात्मक परिचय - स्तोत्रसाहित्य की परम्परा - मध्यकालीन हिन्दी साहित्य में स्तोत्र और उनके पांच प्रकार - भगवंतराय की भक्ति रचनाएं - भगवंतराय की भक्ति का स्वर - भक्ति रचनाओं में काव्य सौंदर्य - भगवंतराय की श्रृंगारी रचनाएं - श्रृंगार की मर्यादा का निवाहि - भूषण से तुलना - बिम्ब विधानों की विशेषता और शैली के ओजगुण - छंद-काव्य और छंद - कवित अथवा कवित्त - भगवंतराय के कवितों में संगीत तत्व - अलंकार, रीति और गुण - भाषा - मिश्रित भाषा की परम्परा - भगवंतराय की भाषा - संगीतात्मकता के कारण भाषा में मिश्रण और तोड़-मरोड़ - भगवंतराय की भाषा का स्थान - नीतिपरक रचना - नीति और काव्य - आलोचना - संगीत - प्राप्त सामग्री (कौष्टक और ध्रुपद) सूचित सामग्री- आलोचना ।

चतुर्थ अध्याय

१४६-१६५

(भगवंतराय खीची के मण्डल के कवियों का वृत्त)

महाकवि देवदत्त ` देव ` - देव और भगवंतराय के सम्बन्धों का अनुमान- ग्रन्थ का नाम जैसिंह पर आधारित है पर वास्तविक आश्रयदाता भगवंतराय ही थे - जैसिंह विनोद

और महाकवि देव - महाकवि देव की जीवनी - देव का व्यक्तित्व - अनुभूतियां ।
सदानन्द - गोपाल - मुहम्मद - शंभुनाथ मिश्र - उदयनाथ ` कवीन्द्र ` - सुखदेव
मिश्र - सुखदेव मिश्र से सम्बन्धित पूर्व सूचना का विवरण - पूर्व उल्लेखों की परीक्षा
और सुखदेव मिश्र कवि का काल निर्णय - निष्कर्ष - व्यक्तित्व और अनुभूतियां -
नेवाज - नेवाज सम्बन्धी पूर्व उल्लेखों की समीक्षा - छत्रशाल और भगवंतराय के यहां
रहने वाले नेवाज में कुछ समान प्रकृति के लक्षण - नेवाज कवि का परिचय - भूधर -
भूधर नामधारी चार कवि - भगवंतराय से सम्बंधित भूधर कवि का परिचय - चतुरेश-
मल्ल - सारंग - अन्य कवि (हेम, कंठ, इन्द्र, नाथ और श्याम लाल)

पंचम अध्याय

१९६-२१४

(रचनाओं का वर्ण्य विषय)

जेसिंह विनोद- प्रति परिचय - प्रामाणिकता - वर्ण्य विषय -
रासा भगवंतसिंह का - प्रति परिचय - ~~रच~~ प्रामाणिकता - रचनाकाल - वर्ण्य विषय-
भगवंत विरुदावली - प्रति परिचय - प्रामाणिकता - रचनाकाल - वर्ण्य विषय -
भगवंतराय खीची का जंगनामा - प्रति परिचय - प्रामाणिकता - रचना काल - वर्ण्य
विषय - अलंकार दीपक - प्रति परिचय - प्रामाणिकता - रचना तिथि - वर्ण्य-
विषय-रस-कल्लोल - भगवंतराय का यश-वर्णन - रस-तरंगिणी - रति विनोद
चंद्रिका - प्रति परिचय - प्रामाणिकता - वर्ण्य विषय - रस दीपक - रस चन्द्रोदय -
मदन रसार्णव - प्रति परिचय - प्रामाणिकता - रचना काल - वर्ण्य-विषय - छंद
विचार अथवा पिंगल छंद विचार - प्रति परिचय - प्रामाणिकता - रचना काल - वर्ण्य
विषय - रस रत्नाकर - प्रति परिचय - प्रामाणिकता - रचना ~~का~~ तिथि - वर्ण्य
विषय - अन्य कवियों की रचनायें - रचनाओं का वर्गीकरण ।

षष्ठ अध्याय

२१५-२७२

(काव्य रूप एवं काव्य सौष्ठव)

विनोद - जंगनामा - विरुद - रासा - मुक्तक (काव्य रूप) - ~~विनोद~~ काव्य सौष्ठव -
शृंगार रस का स्वरूप - देव की शृंगार विषयक मान्यता - जैसिंह विनोद का शृंगार

वर्णन - भाव पक्ष और कला पक्ष - जैसिंह विनोद का देव की रचनाओं में स्थान। वीर रस का स्वरूप - वीर रस का आश्रय पक्ष (नायक) - नायक में लोक संग्रह का भाव एवं अन्य गुण - उत्साह - युद्ध की तैयारी - बिम्ब विधान और युद्ध वर्णन की सजीवता - हिन्दी के अन्य वीर काव्यों से तुलनात्मक विवेचन - आलोचना और स्थान निर्धारण।

सप्तम अध्याय

२७३-३०१

(इतिहास निरूपण)

संस्कृत कवियों में इतिहास निष्ठा का अभाव - हिन्दी कवियों में इतिहास निष्ठा का विकास - इतिहास का निरूपण क्यों ? - सामग्री और अध्ययन प्रविधि जैसिंह विनोद के ऐतिहासिक तथ्यों की समीक्षा - `भगवंतराय खीची का जंगनामा ` के ऐतिहासिक तथ्यों की समीक्षा - क्या भगवंतराय कुल से मारे गये ? - ` रासा भगवंतसिंह का ` के ऐतिहासिक तथ्यों की समीक्षा - भगवंत विरुदावली के ऐतिहासिक तथ्यों की समीक्षा - शम्भू नाथ मिश्र तथा अन्य स्फुट रचनाकारों की रचनाओं के कुछ ऐतिहासिक तथ्य।

अष्टम अध्याय

३०२-३०८

(उपसंहार)

परिशिष्ट


१- भगवंतराय खीची की रचनायें (३०८-३१७)

२- भगवंतराय के प्रति की गई कवियों की प्रकीर्ण रचनाएं (३१७-३३७)

३- ` देव ` कृत ` जैसिंह विनोद (३३७-३८७)

४-मुहम्मद कवि कृत ` भगवंतराय खीची का जंगनामा ` (३८१-३९४)

५- गोपाल कृत ` भगवंत विरुदावली ` (३९५-४०५)

६- सहायक-ग्रन्थ-सूची (४०६-४१३)


-oo-